रांगेय राघव की कहानियों में चित्रित सामाजिक यथार्थ

प्रा. जे. ए. पाटील, क्रांती अग्रणी जी. डी. बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल.

भूमिका –

रांगेय राघव के सामाजिक विचार मनुष्य के सामाजिक जीवन में उसके भौतिक परिवेश और परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया के व्दंद को संकेतित करते है। उनकी कहानियाँ सामाजिक और राजनीतिक जीवन के व्यापक तथा यथार्थ बोध से सीधा साक्षात्कार कराती है और जीवन के अनुभूत यथार्थ को सामने लाती है जिसमें से जीवन की गहराई जानने का प्रयास किया जा सकता है। रांगेय राघव अपनी कहानियों में ग्रामीण और शहरी निम्न वर्ग, मध्यवर्ग के सुख दुख के साथ उच्चवर्ग के शोषण तथा अत्याचारों को भी चित्रित करते है। उन्होंने अपनी कहानियों में उपेक्षित वर्ग को वाणी देने का सफल प्रयास किया है।

1. उपेक्षितो के प्रति सहानुभूति –

रांगेय राघव ने अपने उपन्यासों की भाँति अपनी कहानियों में भी एक ओर गरीब मनुष्य के शोषित जीवन और दूसरी ओर उपेक्षित तथा शोषितों के सामाजिक पक्ष को अभिव्यक्ति दी है। 'अंगारे न बुझे', 'नरक' जैसी कहानियाँ लोहपीटों, बंजारों और कंजरों के उपेक्षित, दीनहीन जीवन को दिखाती हैं, तो 'मरघट का देवता'और 'मुर्दे'जैसी कहानियाँ स्मशानवासियों के उपेक्षित अभिशप्त जीवन को उभारती है। उसमें इस सत्य को उभारा है कि लाशों से सदा संबंध रहने से जीवन का रंग –रुप, आशा – खुशी इनके लिए केवल एक झोल है। जीवन और मृत्यु की सीमा पर रहनेवाले इन मानव जीवन की भावनाएँ कुछ उछलती हुई तत्काल ही दबकर लाशों की भाँति चेतनाहीन हो जाती है। फिर भी प्रतिदिन मृत्यु के दर्शन होने पर भी जिंदगी से इनका मोह नहीं छूटता। इसलिए लाशों के लिए दी जानेवाली लकडी मैहंगी दामों में बेचने का मोह उनमें सदैव रहता है।

'अंगारे न बुझे' और 'नरक' कहानियों में चित्रित उपेक्षितों से लगता है – कि "आज तक इनकी ओर समाज का ध्यान नहीं गया। इन तक सूर्य की किरन अर्थात सभ्यता की रोशनी तक नहीं पहुँची। तभी तो वे चलते – चलते जीवन बिता देते है। उन्हें एक जगह टिक कर जीना नहीं आता । वे सूर्य के डूबने से सूर्य के उगने तक एक स्थान पर रहते है। फिर जैसे भूमि व्यर्थ हो जाती है वे आगे बढ जाते है"1 उपेक्षितों के प्रति सहानुभूति उपरी कथन से दिखाई देती है।

2. गरिबों की भयावह जिंदगी का यथार्थ चित्रण –

रांगेय राघव ने अपनी कहानियों व्दारा समस्त सामाजिक जीवन को उसके यथार्थ रुपमें चित्रित करने का प्रयास किया है। इसलिए समाज के बंजारे, लोहपीटे जैसे उपेक्षित वर्ग को वाणी देने का प्रयास किया है। उसके साथ – ही – साथ समाज के निम्नवर्ग के गरीब अर्थहीन जिंदगी को भी उन्होंने चित्रित किया है। गरीब भले ग्रामीण हो या शहरी उनकी स्थिति में कोई अंतर नहीं है। इस सत्य का नग्न रुप उनकी 'तिरिया', 'भय', 'गदल', 'गँज', 'आवारा', 'अच्छाबुरा', 'अभिमान', 'फूल का जीवन', 'नरक', 'इंसान' आदि कई कहानियों में दिखाई देता है।

ग्रामों में जीवन आज भी संस्कारों से जकडा हुआ है। ये संस्कार भोली – भाली जनता पर प्रेत बन चिपके हुएं है। इनके प्रभाव से ही तो 'भय' कहानी के न तुरसी और न पत्नी धूपों में इतनी शक्ति है कि वे अपनी बहु के साथ हुई बर्बर अमानुष्यता के प्रति मुँह खोल सके। उल्टे धूपों सोचती है-" यह बात तो कैसे भी छिपानी होगी।"2 अपने खिलाफ हुएं अन्याय के प्रति आवाज नहीं उठा सकते। प्रस्तुत कहानियों में अंतहीन गरिबी, भूखमरी और भीख ही जैसेउनकी नियति है। लेखक समाज में छोटे, उपेक्षित, गरीब, आवारा समझे जानेंवाले लोगों का यर्थाथ चित्रण करते है।

3. सामाजिक विषमता का हू – ब – हू- चित्रण –

रांगेय राघव की यह विशेषता रही है कि वे यर्थाथ को विरोधी परिवेश में उपस्थित कर मनुष्य के सामाजिक जीवन की विषमता को हु-ब-हु दिखाने का प्रयास करते है। उनकी 'अच्छा बुरा' कहानी में सामान्य आदमी की गरीबी का यह चित्र दृष्ठव्य है – " बारह की नुक्कड परएक ठेले में अस्सो सो रहा था। एकाएक उठ बैठा, मच्छर मारते – मारते थक गया था। एक आवाज करती हुई अंगडाई ली और छलांग मारकर उठा और फिर देर पीठ, जाँघ खुजलाकर अंत में कुत्ते की तरह फडफडाया ।"3 इसप्रकार के परिवेश की यथार्थ स्थिति में मनुष्य की दशा और स्थिति का यथार्थ अंकन किया है।

4. सामाजिक विकृतियों का चित्रण –

आधुनिक समाज – व्यवस्था में मानवीय जीवन घुटून, पीडा और विषम स्थिति के लिए कुछ हद तक सामाजिक विकृतियाँ एवं विसंगतियाँ जिम्मेदार है। विकृत एवं विसंगतिपूर्ण समाज में मानव की खाल ओढे हुए दानव भेडिए बर्बरता और अमानवीयता में लीन रहते है और इनके निर्दयी शोषण तथा कठोर बंधनों के नीचे दबते हुएं निर्धनो की चीख – चिल्लाहट की गूँज अनगुंजित होती रहती हैं ऐसी स्थिति में एक ओर धनरुपी खून कर प्यास, कठोरता, निर्दयता होती है तो दूसरी ओर गरीब का अभिशप्त जीवन।

अ. डॉक्टरों के लोभी स्वभाव का चित्रण –

रांगेय राघव की कहानियाँ इस प्रकार की सामाजिक विकृतियों और गुनाहों को उनके यथार्थ रुप में उदघाटित करती है। 'काई' कहानी में दिखाया गया है कि डॉक्टर का व्यवसाय मानव – जीवन से खिलवाड हैं वह धन पाने की लालसा से ही मरीज की ओर बढता हैं। रांगेय राघवने डॉक्टरों की वासना, कामुकता कों दिखाने के साथ, गर्भ के पाप को मिटाने के लिए रिश्वत लेने झूठ फरेब से धन कमाने की वृत्ति का यथार्थ चित्रण किया है। उनका कहना है कि – "सभी इज्जतदार डॉक्टरों की प्रैक्टिस ऐसे ही स्थापित होती है। फिर एक बार मरीज की नस पकड ली कि 'फैमिली डॉक्टर' बनकर अपनी गाडी खिंचते चले जाते है।"4 इसी तरह डॉक्टरों की स्वार्थी वृत्ति का पर्दाफाश लेखक ने अपनी 'काई' कहानी में किया है।

ब– कर्तव्यच्युत अध्यापक वर्ग का चित्रण .

रांगेय राघव ने समाज का आधार माने जानेवाले प्रोफेसर युवा पीढी के चरित्र – निर्माता अध्यापक वर्ग की भी धनलोलुपता और कामुक होकर अपने कर्तव्य से विमुख हो जाने की वृत्ति को दिखाया हैं इज्जतदार कहे जाने वाले अध्यापक भी गरिबों का शोषण करते हैं। और गरीब के मुँह खोलने पर उनकी तनख्वाह दाब कर निकाल देते हैं। वे कहते है – "इन्साफ माँगने पर इन्साफ होता है कि प्रोफेसर इज्जत का आदमी है वह बारह रुपये के लिए झूठ नहीं बोल सकता।" 5 प्रस्तुत सामाजिक विकृति का सशक्त चित्रण हुआ है।

क. अधिकारियों का भ्रष्टाचार–

डॉकटर, अध्यापकों की तरह दप्तरों में अप्सर अधिकारी सभी विलासी और धनलोलुप होते है। वे अपने संकुचित दायरों में समस्त मानवीय संबंधो से अलग ही रहते है। 'चिडी के गुलाम', 'बच्चा', तिरीया' जैसी कहानियाँ अप्सरों और अधिकारियों की धनलोलुपता को चित्रित करती हैं 'चिडी के गुलाम' कहानी कचहरी में बात-बात पर 'रिश्वत के सत्य को खोलती है।

ड. वकीलों की घाँधलियॉ :-

इससे ऐसा प्रतीत होता है कि समाज में प्रोफेसर की इज्जत उसके अध्यापकीय व्यवसाय से है। इसीप्रकार वकील का सम्मान उसकी झूठी विद्या की कुशलता से अधिक और कानून ज्ञान से कम हैं। अत: वहाँ सम्मान और रोटी के लिए वकील झूठ और अनीति के अस्त्र का प्रयोग करता हैं वहाँ समाज की अज्ञानता वकील की पूँजी है, अंधश्रद्धा बल है, समाजसेवा और न्याय के नाम पर वैध-अवैध्मार्गो का अवलंबन कर्तव्य हैं। रांगेय राघव की जाति और पेशा',

'अनामिका', 'आकर्षण' आदि कहानियाँ इस यर्थाथ को उभारती है।

इ. भिखमंगों के जीवन का सामाजिक यर्थाथ् :-

इसप्रकार के व्यावसायिकों की अहं एवं स्वार्थ भावना अनीतियों व पाशविकता को जन्म देती हुई सामाजिक विसंगतियाँ तथा विकृतियाँ पैदा करती हैं जिनसे व्यवसायहीनों, गरीबों, भिखारियों का जीवन विडंबनीय बनकर नित नई ओर विकृतियों को जन्म देता रहता है। कुत्तों की तरह झूठी पत्तल को चाटकर प्राणों के मोह में ही इतना जीवन बीतता हैं पारिवारिक जीवन के अभाव में ये पशु के स्तर पर पहुँचे जाते हैं इन विडंबनाभरे जीवन का चित्रण रांगेय राधव के 'अधूरी रात' कहानी में हुआ है।

निष्कर्ष:-

ऐसा प्रतीत होता है कि समाज की विषम विसंगतियों को आज तक कोई हटा नहीं सका है जिनकी ओट में स्वार्थी, पद एवं धन प्राप्ति अपनी वासनाओं को छिपाएं रखते है और उपर से भले लगते हुएं अंदर से अत्यंत घृणित होते हैं उपरी समस्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि सामाजिक विकृतियों के इस यर्थाथ चित्रण द्वारा रांगेय राघव ने एक ओर समाज के इस उपेक्षित एवं गरीब वर्ग के प्रति करूणा जागृत करने का प्रयास किया है तो दूसरी ओर संघर्ष की वास्तविकता को चित्रित करते हुएं परिवर्तन के स्वर को भी मुखरित किया है।

संदर्भ सुत्र:-

1. रांगेय राघव – अंगारे न बुझे,किमाब महल, इनाहाबाद, प्रथम संस्करण 1951 पृ-214.
2. रांगेय राघव – भय(इंसान पैदा हुआ)किमाब महल, इनाहाबाद, प्रथम संस्करण 1957पृ-21.
3. रांगेय राघव – अच्छा – बुरा (इंसान पैदा हुआ) किमाब महल, इनाहाबाद, प्रथम संस्करण 1957 पृ-95.
4. रांगेय राघव – काई (ऐय्याश मुर्दे) किमाब महल, इनाहाबाद, प्रथम संस्करण 1951 पृ-128
5. रांगेय राघव – नरक (ऐय्याश मुर्दे) किमाब महल, इनाहाबाद, प्रथम संस्करण 1953पृ-238.